ORIGINAL RESEARCH PAPER

Management

कोशी क्षेत्र में जल प्रबंधन :

KEY WORDS:

डा0 मो0 रफत परवेज

वैसे तो कोशी क्षेत्र जल के मामले में हमेशा से आत्मनिर्भर रहा है लेकिन कभी–कभी अत्यधिक आत्मनिर्भरता भी नई त्रास्दी को जन्म दे देता है । कोशी क्षेत्र में फैले अकुत जल संपदा का अगर सही प्रबंधन नहीं किया जाता तो आज कोशीवासी पहले की अपेक्षा कोशी की क्रुरता से ज्यादा विस्थापन का दंश झेलने को मजबूर होते। प्राथमिक स्त्रोत जो कि अधिक प्रमाणिक और महत्वपूर्ण होते हैं के आधार पर 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रकाशित समाचार पत्र, बुकलेट समकालीन साहित्यों के आधार पर इसके प्रबंधन की सटीक एक विश्वसनीय जानकारी हमें मिलती है ।

निश्चित ही कोशी का इतिहास प्राचीन काल से ही गौरवपूर्ण रहा है । अठारहों पूराणों, रामायण, महाभारत आदि ऐसा कोई धर्मग्रन्थ नहीं है जिसमें कौशिकी अथवा कोशी नदी तथा इसके किनारे बसे तीर्थों की चर्चा नहीं की गई है । भारत का प्रथम सांस्कृतिक भूगोलवेत्ता ने इस क्षेत्र का विवरण लिखा है । मध्यकाल में इस क्षेत्र में कई सांस्कृतिक, राजनीतिक हलचल हुए थे । लेकिन कोशी की विभीषिका ने इस क्षेत्र के पूरास्थलों स्मारकों, कलाकृतियों तथ ऐतिहासिक धरोहरों को नष्ट कर दिया ।

आजकल जल प्रबंध्न सम्पूर्ण विश्व में मानवता के समक्ष ज्वलंत समस्या बनकर उभरा है । वैज्ञानिक अविष्कारों ने जहाँ जीवन स्तर को काफी ऊँचा उठा दिया है और जनसंख्या भी बढ़ी है । प्राकृतिक संसाधनों के प्रचूर मात्रा में दोहन के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक संसाधन और मानव सभ्यता के बीच का संतुलन डगमगाने लगा है और इससे कोशी क्षेत्र भी अछुता नहीं रहा है । सन् 1987 में कोशी पीड़ित विकास प्राधिकार की स्थापना हुई जो जल प्रबंधन के क्षेत्र में पूर्ण पड़ाव जैसा था । कोशी अपनी धाराओं को बदलने के लिए विख्यात रही है, और धारा बदलने के साथ ही शुरू हो जाती है कोशी का तांडवनृत्य जो कोशीवासी को असमय काल के गाल में समा लेती है । चीन की वांगहो नदी के तरह कोशी भी बिहार के शोक (वततवू व ठिपींत) के नाम से प्रसिद्ध है ।

22 मार्च को विश्व जल दिवस का फैसला संयुक्त राष्ट्र ने 1992 में ही किया था । इसका मकसद था कि जल के संरक्षण और रखरखाव के प्रति विश्व में जागृति फैले । विश्व का 16 फीसदी आबादी भारत में है जबकि उसके लिए जल सिर्फ 4 फीसदी ही उपलब्ध है ।

बारिश की एक–एक बूंद कीमती है । पहले कहा जाता था कि भारत वह देश है जिसके गोद में हजारों नदियाँ बसती है । लेकिन आज वे नदियाँ केवल सैकड़ों में होगी । इसी में से एक नदी कोशी है जो वर्ष 1700 से 1735 तक सौरा नदी के साथ प्रवाहित होती रही। गढ़बनैल, फारबिसगंज, कटिहार होते हुए यह मनिहारी में गंगा से मिलती है । 1807 से 1838 तक कोशी पश्चिम की ओर खिसककर लच्छा धारा के साथ बहने लगी । पुनः 1840 से 1873 तक कोशी हाहा या हहिया धार का सहारा लेकर विध्वंसक बनने लगी । 1875 से 1892 तक कोशी सुरसर, बड़गाँव, मुरलीगंज होते हुए कुरसैला के रास्ते बहती रही । 1937 में कोशी ने अपनी स्वतंत्र धारा बनाई । 1952 में यह त्रियुगा को पार कर दरभंगा जिले की सीमा में प्रवेश कर चूकी थी । यूँ कहा जाए कि 250 वर्षों में कोशी ने 80 मील पश्चिम तक की यात्रा की। इस यात्रा के पश्चात सहरसा जिले के सुखपुर, पंचगछिया, बनगाँव आदि क्षेत्र जो कभी अपनी हरियाली के कारण ''हँसते हुए बाग'' की उपाधि लिए हुए थे । कोशी ने इसे गोल्डस्मिथ के क्मेमतजमक टपससंहम में परिणत कर दिया। 1946 में मेंजमतद झवेंप ।कअपेवतल ब्वउउपजजमम का गठन किया गया । 6 अप्रैल 1947 को कोशी पीड़ितों का एक अधिवेशन निर्मली में हुआ था जिसमें डा0 राजेन्द्र प्रसाद, सी0 एच भाभा, श्री कृष्ण सिंह, श्री राजेन्द्र मिश्र, श्री हरिनाथ मिश्र, श्री अनुग्रह नारायण सिंह, श्री बनारसी प्रसाद झुनझुनवाला आदि ने भाग लिया । इसी सम्मेलन में कोशी नदी को नियंत्रित करने के लिए बाँध बनाने की योजना प्रस्तुत की गई । 1954 में योजना प्रारंभ हुई और 31 मार्च 1963 को कोशी की धारा को नियंत्रित कर तटबंध में कैद कर लिया गया फलस्वरूप तकरीबन 1,50,000 की आबादी को विस्थापन का दंश झेलना पड़ा । किन्तु बाँध बनने के बावजूद कोशी की विनाशलीला नहीं रूकी । 1963, 1968, 1971, 1984, 1987, 2008 में कोशी तटबंधों को तोड़ती रही और अपने प्रलय और तांडव से बरबादी की दास्तान लिखती गई । संपूर्ण कोशी बाँध सिर्फ राजनीति की विसात बनकर और लुट के नये कारोबार का माध्यम बन कर रह गई । विडम्बना देखिए बिहार के इस शोक को लंदन के टेम्स नदी में बदलने का ख्वाब दिखाने वाले नेतागण वर्ष के तीन चार महीनें बयानबाजी करके कुंभकर्नी नींद में सो जाते है और एक बार फिर से कोशी पीड़ित विस्थापन और पूर्नवास के लिए टकटकी लगाए रह जाते है ।

1984 में नवहट्टा के हेमपुर गाँव के सैकड़ों परिवार तथा 2008 के कुसहा त्रासदी में तबाह हुए हजारों परिवार आज भी विस्थापन का दंश झेलने को मजबूर है और उसके पूर्नवास के लिए सरकारी प्रयास सिर्फ ऊँट के मुँह में जीरा के समान ही साबित हो रहे हैं । मंडल कमिटी 1975 के अनुसार कोशी नदी में प्रतिवर्ष आ रहे 8600 एकड़ फीट सिल्ट; 9495 हेक्टर मीटर इस भूखण्ड पर सवालिया निशान छोड़ जाते है। 468 कि0मी0 लम्बी नदी जिसमें 220 कि0 मी0 कोशी नेपाल में बहती है जिसका जल ग्रहण क्षेत्र 74500 वर्ग कि0 मी0 है लेकिन गाद (सिल्टेशन) के कारण समृद्धि की प्रतीक और जीवन रेखा मानी जाने वाली ''कोशी'' आज ''शोक'' और दुःख का कारण बनी हुई है ।

जलाभाव, जल प्रदूषण और जल प्रबंध के आँकड़े वास्तव में घोर चिंता पैदा करने वाले हैं । इसका कुशल, न्यायोचित और निरंतर उपयोग पर समेकित रूप से विचार कर धरातलीय (महज कागजी नहीं) योजना बनाई जाए और इसके क्रियान्वयन पर कठोर निगरानी रखी जाए। भूगर्भीय जल के घटते स्तर पर विराम लगाने की विधिक, वैज्ञानिक प्रशासनिक, समाजिक प्रयास एवं चेतना विकसित की जाए । जल को मानवाधिकार बनाने संबंधी संयुक्त राष्ट्र के प्रयास को विश्व के सभी देश और समाज की सभी इकाइयाँ संयूक्त रूप से और पूरी जिम्मेवारी के साथ समर्थन दे तो संभव है अन्य क्षेत्रों के नदियों की तरह ही अपनी ''कोशी'' भी ''शोक और दुःख'' की जगह'' ''हर्ष और उल्लास'' की पर्याय बन जाएगी ।

पिछले एक दशक के दौरान कोशी पूर्नवास के नाम पर कोई बदलाव या उपलब्धि दर्ज नहीं की गई है । इंतजार तो बस इन आँखों को है कि कब कोई दूसरा गाँधी या जयप्रकाश पैदा ले ? जिस तरह से इन दो महान विभूतियों ने देश में राजनैतिक जागरूकता का एहसास देशवासियों को कराया वैसा ही एहसास कराने वाला कोई सपूत इस कोशी मैया के गर्भ से भी निकले जो वर्षों से कोशी तटबंध पर गुंजते गीत ''आ आरे सोन चिड़ैया कए दे हमरो दुख दूर''......... के सार्थकता को सिद्ध कर सके ।